Tender Heart High School, Sector- 33 B Chandigarh.

कक्षा - नौवीं
विषय - हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक : एकांकी संचय

पाठ - 1 'संस्कार और भावना' (एकांकी) लेखक - विष्णु प्रभाकर

सुप्रभात प्यारे बच्चो !

आज हम कक्षा नौवीं की हिन्दी साहित्य की पाठ्य पुस्तक 'एकांकी संचय' की पृष्ठ संख्या पाँच में दिए गए पाठ-1 'संस्कार और भावना' नामक एकांकी को पढ़ेंगे जिसके लेखक श्री विष्णु प्रभाकर जी हैं।

प्रस्तुत एकांकी 'संस्कार और भावना' एक मध्यम-वर्गीय परिवार की ऐसी माँ की कहानी है जो संस्कारों की बेड़ियों को तोड़ अपनी ममता के महत्त्व को समझकर परिवार को एक कर लेती है। पुरातन पंथी और रुढ़िवादी विचार जिन्हें संस्कारों की ओट में बनाए रखने का प्रयास किया जाता है - इसके प्रति बदलाव लाना तथा यह याद दिलाना कि कभी जिन बातों का हम प्राण देने की सीमा तक विरोध करने को तैयार रहते थे, समय आने पर हम उन्हें ही सहर्ष स्वीकार करने को तैयार हो जाते हैं क्योंकि परिस्थितियाँ हमें ऐसा सोचने और करने को विवश कर देती हैं।

'मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत एकांकी में तीन प्रमुख पात्र हैं। माँ, अतुल एवं उमा हैं। अविनाश तथा उसकी पत्नी अन्य पात्र हैं।

- माँ - इस एकांकी की सबसे प्रमुख पात्रा माँ है। पूरी एकांकी उन्हीं के आस-पास घूमती है। माँ एक

रूढ़िवादी वृद्ध्ध महिला है, जो संस्कारों से इस तरह जकड़ी है कि अपने बड़े बेटे के प्रति निर्मम हो जाती है और उसकी विजातीय बहू को अपना नहीं बना पाती है। इसके साथ ही वे कोमल हृदया, ममतामयी तथा समझदार स्त्री भी हैं। उन्हें अपने बड़े बेटे एवं बहू से दूर रहने का दु:ख भी है। हैजा से पीड़ित पुत्र की सेवा करते हुए विजातीय बहू की बीमारी के बारे में जानने पर वे ममता के वशीभूत होकर बेटे-बहू को अपनाने तथा बहू की सेवा करने का भी निर्णय लेती है।

- अतुल - अतुल इस एकांकी का प्रमुख पुरुष पात्र है। वह अपनी माँ तथा पत्नी उमा के साथ रहता है। वह आधुनिक विचारों से युक्त, बड़ों का सम्मान करने वाला रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोध करने वाला तथा दूसरों की भावनाओं की कद्र करने वाला व्यक्ति है।
- उमा - उमा घर की छोटी बहू तथा अतुल की पत्नी है। वह पढ़ी लिखी, आधुनिक विचारों वाली, रूढ़िवादी संस्कारों के स्थान पर मानवता की पक्षधर तथा दयालु महिला है। वह बड़ी भाभी का आदर करती है और चाहती है कि पूरा परिवार मिलकर रहे। वह बड़ी भाभी की सुन्दरता और गुणों की प्रशंसक है, लेकिन माँ की भावनाओं को ध्यान में रखकर खुलकर कुछ बोल नहीं पाती। अंत में माँ के हृदय परिवर्तन पर बड़े बेटे-बहू को अपनाने की बात सुनकर वह बहुत प्रसन्न हो जाती है।

गौण पात्रों का चरित्र-चित्रण

- अविनाश - अविनाश एक आधुनिक मानसिकता रखने वाला, स्वाभिमानी और पत्नी से अत्यधिक प्रेम करने वाला पुरुष है।
- अविनाश की बहू - अविनाश की बहू घर की बड़ी बहू है परन्तु माँ के अस्वीकार करने पर वह परिवार से अलग अपने पति के साथ रहती है। वह आधुनिक विचारों वाली, सहृदयी, कोमल स्वभाव

और निश्छल स्वभाव की आधुनिक महिला है। उमा के अनुसार उनकी शैशव जैसी भोली मुसकराहट है जो उनसे मिल ले, वह उनके गुणों की प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सकता।

इनके अतिरिक्त रामसिंह जो कि एक नौकर है तथा मिसरानी अन्य पात्र है।

एकांकी में मंच सज्जा के बारे में बताया गया है। मंच पर सब चीज़ें व्यवस्थित रूप से रखी हुई हैं। आँगन में एक ओर पलँग पड़ा है। पलंग पर उमा लेटी है। पर्दा उठते ही वह कोहनी पर भार टिकाए हुए शून्य में ताकती हुई दिखाई दे रही है। कान का आभूषण उसके गाल पर आ गया है। अचानक वह पुस्तक पढ़ते-पढ़ते कुछ सोचने लगती है और कहती है कि जिन बातों का हम प्राण देकर भी विरोध करने को तैयार रहते हैं, एक समय आता है कि वे ही बातें हम चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं अर्थात् हम अपने मन में कभी ऐसे विचार बना लेते हैं कि अपने विचारों को किसी भी परिस्थिति में बदलना नहीं चाहते। चाहे हमें इसके लिए कितनी ही बड़ी हानि क्यों न उठानी पड़े।

बच्चो! एकांकी का आरंभ और अंत भी उमा के इसी कथन से होता है। यह कहकर उमा निरर्थक देखने लगती है। वह इतनी खोई है कि नौकर के आकर बरतन ले जाने का भी उसे पता नहीं चलता। तभी पश्चिम वाला बाहर का दरवाज़ा खुलता है। माँ परेशान हालत में प्रवेश करती हैं। उमा उनकी आवाज़ सुनकर उठती है और आँचल ठीक करती है।

माँ उमा से कहती है कि उनका बड़ा बेटा अविनाश पिछले महीने बहुत बीमार रहा था। उमा ने जब माँ जी से कहा कि उन्होंने अर्थात् अतुल ने तो इस बारे में मुझे कुछ नहीं बताया। माँ ने उमा से पूछा कि क्या वह अर्थात् अतुल वहाँ जाता है? उमा कहती है

कि फिर भी सुना तो होगा। जब उमा माँ से पूछती है कि आपको यह बात किससे पता चली तब माँ उमा को बताती है कि वे कुमार के घर गई थी। जो उनके पड़ोस में रहते हैं। वहाँ उसकी मिसरानी के द्वारा उन्हें पता चला कि उनका बड़ा बेटा अविनाश बहुत बीमार हो गया था। मरते-मरते बचा है।

अविनाश माँ का बड़ा बेटा है जो माँ से अलग रहता है क्योंकि उसने एक विजातीय बंगाली लड़की से विवाह किया था। माँ के संस्कारों के यह विपरीत था, अतः माँ ने अविनाश से अपने संबंध तोड़ लिए थे।

मिसरानी से अपने बेटे अविनाश के बीमार की खबर सुनकर माँ शर्मिंदा हुई। माँ के अनुसार यह कितने दुःख की बात है कि उनका बेटा बीमार रहा और माँ को बेटे की बीमारी का पता भी नहीं चला। उन्हें लगा कि वे अविनाश की माँ है अतः यह बात उन्हें पहले पता होनी चाहिए थी, इसलिए मिसरानी की बात सुनकर वे शर्म से गड़ गई। फिर पुराने समय को याद करती हुई वे उमा को बताती हैं कि बचपन में यदि अविनाश को खाँसी भी हो जाती थी, तो वे कई-कई दिन तक न खाती थी, न सोती थी अर्थात् दिन-रात करके उसकी सेवा करती थी। अविनाश के पिता उन्हें (माँ को) बहुत समझाते थे यहाँ तक कि नाराज़ भी हो जाते थे परन्तु उनका मन नहीं मानता था। ऐसा कहते ही माँ रोने लगती हैं। उमा उन्हें संभालती है। जब उमा कहती है कि माँ जी, इसमें आपका कोई अपराध नहीं है तब माँ दुःखी होकर कहती है कि अपराध किसी का नहीं केवल मेरा है। सब मुझी को दोष देते हैं क्योंकि मेरे अविनाश की पत्नी को अस्वीकार करने के कारण ही अविनाश इस घर से दूर रहता है। माँ को मिसरानी से यह भी पता चला कि अविनाश की पत्नी ने अपने प्राण

देकर अविनाश की जान बचाई है। वह (अविनाश की पत्नी) अकेली थी परन्तु उसने किसी से सहायता नहीं माँगी केवल एक-दो बार मिसरानी ने दवा ला दी थी। वरना स्वयं दवा लाती थी और घर का काम करती थी तथा अविनाश की देखभाल भी अकेले ही करती थी।

उमा माँ को रोककर उनसे पूछती है कि आखिर उन्हें क्या हुआ था ? तब माँ बताती हैं कि उसे (अविनाश को) हैजा हुआ था। तबीयत अधिक खराब होने के कारण वह दफ़्तर नहीं जा पाता। इस बात का जब माँ को पता चलता है तो वह इस अपराध का दोषी स्वयं को मानती है। माँ संस्कारों के बंधन में बुरी तरह जकड़ी हुई थी। इसी कारण वह अपने से नीच जाति की विजातीय बहू को स्वीकार नहीं कर पाती उधर अविनाश अपनी पत्नी को छोड़ नहीं पाता। अतः वह माँ से अलग होकर रहने लगता है। इस कारण न माँ बड़े बेटे के पास जाती है और न बेटा-बहू माँ के पास आते हैं। वे एक-दूसरे के सुख-दुःख का हाल जानने से वंचित रहते हैं।

अविनाश की बीमारी की बात सुनकर हैरानी होती है कि अतुल को यह बात पता नहीं होगी क्योंकि उसे (उमा को) अतुल के दफ़्तर के काम के सिलसिले में बड़े भाई अविनाश के घर जाने की बात पता थी। इसलिए वह अतुल के बड़े भाई के बीमार होने की बात से अनजान होने की बात पर हैरान होती है।

माँ उमा को बताती है कि वह अपने बेटों को अच्छी तरह जानती है। माया-ममता किसी को नहीं छू गई। वे दोनों हर बात पर देश धर्म और कर्तव्य की दुहाई देते हैं। उन्होंने व्यक्तिगत परेशानियों को कभी महत्त्व नहीं दिया। पारिवारिक धर्म की जगह देश, धर्म और कर्तव्य को ही महत्त्व दिया है।

बच्चो! आज हम अपनी इस एकांकी को यहीं विराम देते हैं। सभी छात्र पृष्ठ संख्या 7 तक इस एकांकी को ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तथा इसे समझने का प्रयास करेंगे।

गृहकार्य

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"वहीं उसकी मिसरानी ने मुझे बताया कहने लगी- तुम्हारा बेटा तो बहुत बीमार रहा, मर कर बचा। सुनकर मैं शर्म से गड़ गई। मेरा बेटा बीमार रहे और मुझे पता भी न लगे।"

प्रश्न (क) कौन, किसके घर गई थी और क्यों?

प्रश्न (ख) वहाँ उसे किसने क्या बताया?

प्रश्न (ग) उसका बेटा उससे अलग क्यों रहता है? वक्ता उससे मिलने क्यों नहीं जाता?

प्रश्न (घ) 'वे' बहुतेरा समझाते थे, नाराज़ भी हो जाते थे' — पंक्ति में 'वे' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है? उनकी चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

धन्यवाद।

[अंतिम पृष्ठ]